वर्णमाला

भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है।

ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण कहते है।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ अं आः

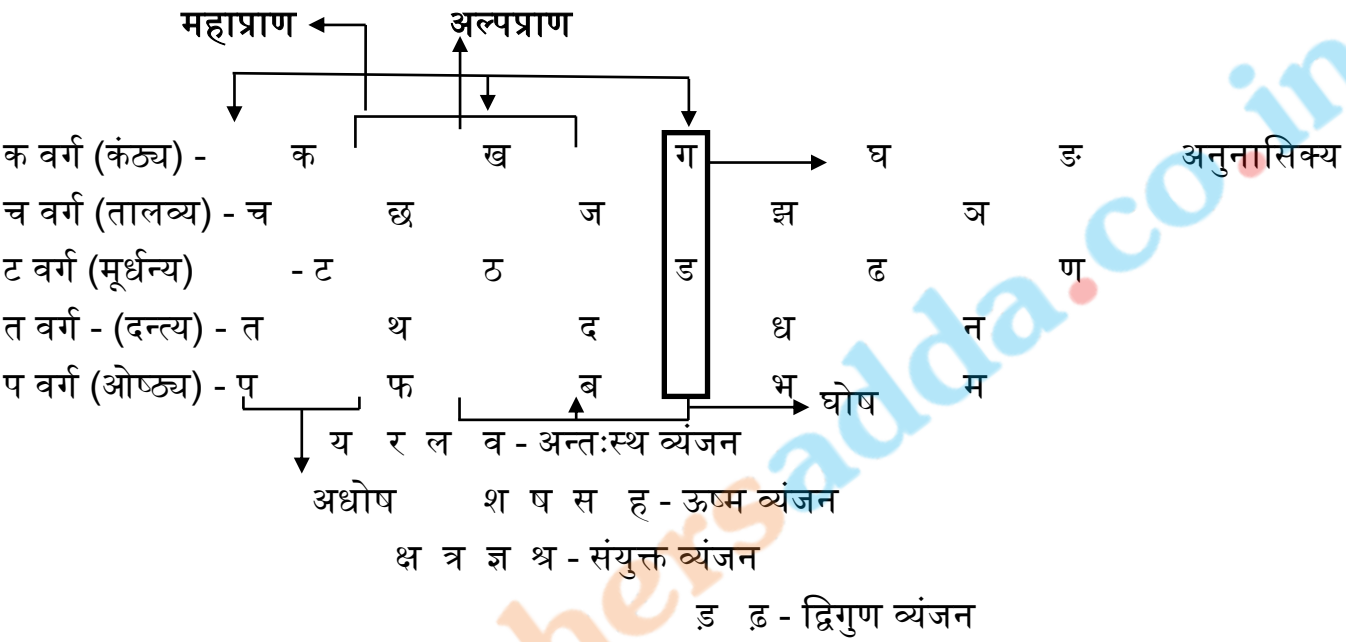

स्वरों का वर्गीकरणः- (1) जीभ के प्रयोग के आधार पर

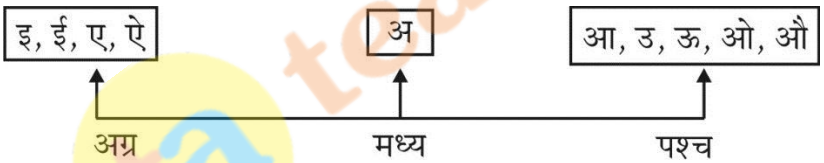

(2) मुख - विवर के खुलने के आधार परः-

(1) विवृत (Open) - मुख-द्वार पूरा खुलता है **आ**

(2) अर्द्ध विवृत - (Half Open) जिन स्वरों के उच्चारण में मुख आधा खुलता है अ, ऐ, औ, आॅ

(3) अर्द्ध संवृत - (Half Close) जिन स्वरों के उच्चारण में मुख- आधा बंद रहता है - ए, ओ

(4) संवृत - (Close) जिन स्वरों के उच्चारण में मुख-द्वार लगभग बन्द रहता है - इ, ई, उ, ऊ

(3) ओष्ठो की स्थितिः- (1) अवृत मुख - जिन स्वरों के उच्चारण में ओंठ गोलाकार नहीं होते- अ, आ, इ, ई, ए, ऐ

(2) वृंत मुखी - ओंठ गोलाकार होते है- उ, ऊ, ओ, औ

(4) घोषत्व के आधार पर - सभी स्वर **घोष** होते है।

शब्द-भेद

हिन्दी के शब्दों के वर्गीकरण के चार आधार है-

1. उत्पत्ति/स्त्रोत/इतिहास
2. व्युत्पत्ति/रचना/बनावट
3. रुप/प्रयोग
4. अर्थ

स्त्रोत या इतिहास के आधार पर शब्द 5 प्रकार के होते हैं-

1. तत्सम - (तत् + सम)- उसके समान अर्थात संस्कृत के समान। हिन्दी में अनेक शब्द संस्कृत से सीधे आये है और आज भी उसी रूप में प्रयोग किये जा रहे है। अतः संस्कृत के ऐसे शब्द जो हम ज्यों का त्यों प्रयोग में लाते है तत्सम कहलाते है। जैसे- अग्नि, वायु, माता, पिता, प्रकाश, पत्र, सूर्य आादि।

2. तद्भव - (तत् + भव) - उससे होना। अर्थात संस्कृत शब्दों से परिवर्तित होकर बने शब्द संस्कृत के जो शब्द प्राकृत, अपभ्रंश, पुरानी हिन्दी आादि से गुजरने के कारण आज परिवर्तित रूप में मिलते है तद्भव शब्द कहलाते है-

उज्जवल	-	उजला
कपूर	-	कपूर
संध्या	-	साँझ
हस्त	-	हाथ

नोट - 'क्ष' का प्रयोग ज्यादा तत्सम मे होता है। - नक्षत्र, क्षत्रिय

I. तत्सम में व वर्ण तद्भव में ब हो जाता है।

वनिक – बनिया, वर्षा बरसात, विवाह ब्याह, वानर बन्दर, विधुत बिजली

II. **तद्भव शब्दों में अधिकतर 'श' वर्ण के स्थान पर 'स' का प्रयोग होता है |**

श – (तद्भव) श्यामल- सावला, श्वसुस- सरसुर, शाक –साग

3. देशज - देशज शब्द का अर्थ है देश में जन्मा ऐसे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए है देशज या देशी शब्द कहलाते है।

जैसे- थैला, गड़बड़, पगड़ी, लोटा, टाँग, ठेठ आदि।

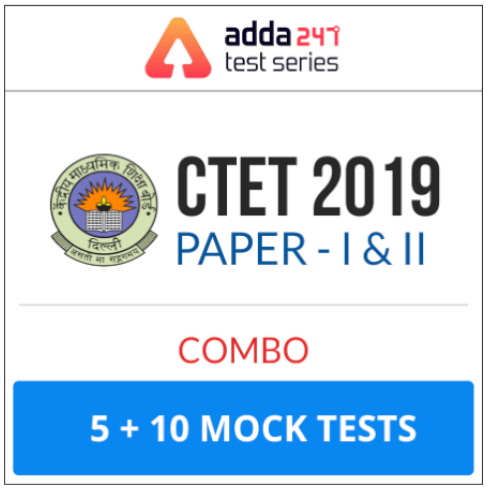

4. विदेशी (विदेशज) (विदेश + ज) विदेश में जन्मा हुआ। अन्य देश की भाषा से आये हुए शब्द विदेशज शब्द कहलाते है।

विदेशज शब्दों में से कुछ को ज्यो का त्यों अपना लिया गया है-

(आर्डर) कम्पनी, कैम्प, क्रिकेट आदि और कुछ का हिन्दीकरण कर के अपनाया गया है-

ओफ़िसर - अफसर, लैनटर्न- लालटेन, कैप्टन-कप्तान

हिन्दी मे विदेशज शब्द मुख्यतः दो प्रकार के है —

मुस्लिम शासन के प्रभाव से आये अरबी फारसी शब्द और यूरोपिय कम्पनियों के आगमन व ब्रिटिश शासन के प्रभाव से आए अंग्रेजी शब्द।

हिन्दी में फारसी शब्दो की संख्या लगभग 3500, अंग्रेजी शब्दों की संख्या लगभग 3000 एवं अरबी शब्दों की संख्या लगभग 2500 है।

संकर शब्द- दो भिन्न स्त्रोतो से आए शब्दों के मेल से बने नए शब्दों को सकंर शब्द कहते है-

छाया (संस्कृत) + दार (फारसी) = छायादार

रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी = रेलगाडी

सील (अंग्रेजी) + बन्द (फारसी) = सीलबन्द

रचना/बनावट के आधार पर

I. रुढ – जिन शब्दों के सार्थक खण्ड ने हो सके और जो अन्य शब्दों के मेल से न बने हो, रुढ़ शब्द कहलाते है। चावल (चा + वल) (चाव + ल), घोडा, घर, दिन, मुँह।

II. यौगिक – यौगिक का अर्थ है मेल से बना हुआ। जो शब्द दो या दो से अधिक शब्दों से मिल कर बनता है, उसे यौगिक शब्द कहते है

वि + ज्ञा, विद्या + आलय, राजा का पुत्र

यौगिक शब्दो की रचना तीन प्रकार से होती है: उपसर्ग से, प्रत्यय से और समास से।

III. योगरूढ – वे शब्द जो यौगिक तो होते है परन्तु जिनका अर्थ रुढ़ (विशेष अर्थ) हो जाता है योगरुढ़ कहलाते है। यौगिक होते हुए भी ये शब्द एक इकाई हो जाते है यानी ये सामान्य अर्थ को न प्रकट कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करते है

जैसे- पीताम्बर, जलज, लम्बोदर, दशानन आदि।

पीताम्बर का अर्थ है पीला वस्त्र किन्तु यह कृष्ण के लिए रुद्ध हो गया।

बहुब्रीहि समास के सभी उदाहरण योग रुढ़ शब्द के उदाहरण है।

रूप प्रयोग के अधार पर —

प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं।

1. विकारी शब्द – वे शब्द जिनमें लिंग वचन व कारक के आधार पर मूल शब्द का रूपांतरण हो जाता है, विकारी शब्द कहलाते है।

लड़का पढ़ रहा है (लिंग परिवर्तन) -लड़की पढ़ रही है।

लड़का दौड रहा है (वचन परिवर्तन)- लड़के दौड रहे है।

लड़के की लिए आम लाओ (कारक परिवर्तन) – लड़को के लिए आम लाओ।